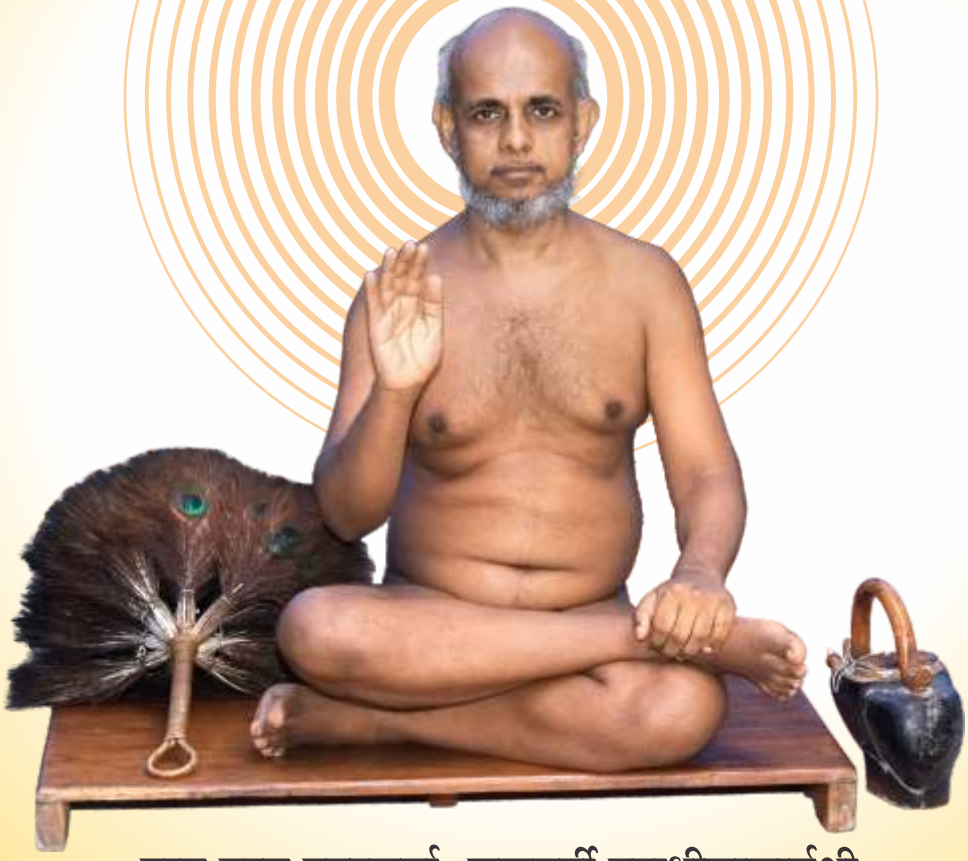

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद ऋषिमण्डल विधान

कृतिकार :

परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,

जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

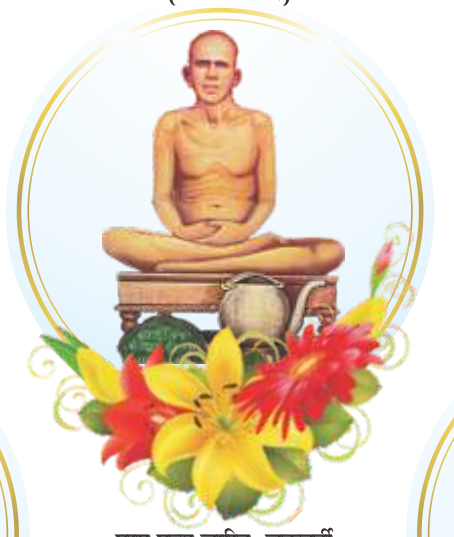

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

ऋषि मण्डल विधान

माण्डला

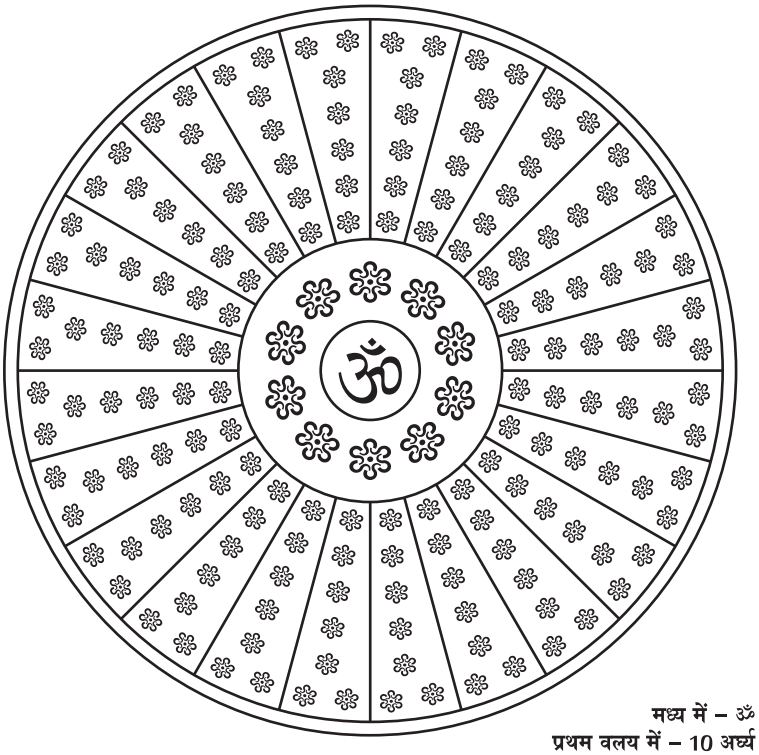

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 10 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 168 अर्घ्य
कुल 178 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

Ñति : **विशद ;षि मण्डल विधाान**

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2015 ' प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज
क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी ब्र. आरती दीदी

प्राप्ति स्थल : 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
गेन : 0141-2319907 द्धघरऋ मो. : 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी द्धहरियाणाऋ, 9812502062, 09416888879

4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971

मूल्य 3[illegible]/- रु. मात्र

अर्घ सौजन्य :-

सुरेन्द्र जैन सुपुत्र श्री प्रकाश चन्द जैन

93/30, आदर्श नगर, रोहतक (हरियाणा)

मो.: 09215502155

मुद्रक : **पारस प्रकाशन**, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
09210640518, E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

सर्व संकट निवारक है यह ऋषिमण्डल विधान

ऋषिमण्डल स्तोत्र मंत्र का माहात्मय अपूर्व है और यह ऋषिमण्डल पूजा व महामण्डल विधान भी प्रभावकारी है। ऋषिमण्डल के मंत्रों द्वारा अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर असाधारण चमत्कारिक प्रयोगों से जैन धर्म का मुकुट ऊँचा किया है। कई श्रृद्धालु लोग नित्य ऋषिमण्डल पूजा करते है, स्तोत्र का पाठ तथा जाप्य करते है। ऋषिमण्डल स्तोत्र एवं पूजन संस्कृत भाषा में सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा है। इसके ऊपर लाखों प्राणियों की अपार श्रद्धा है वर्तमान परिपेक्ष्य में संस्कृत भाषा प्राय लुप्त सी होती जा रही है। युवा पीढ़ी शुद्धता पूर्वक ऋषिमण्डल पाठ करने में कठिनाई महसूस करती है ऋषिमण्डल का प्रभाव हमेशा बना रहा इस हेतु **प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज** ने संस्कृत के स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद व ऋषिमण्डल की पूजा व प्रस्तुत ऋषिमण्डल विधान बनाकर हम भक्तों पर महान उपकार किया है। आजकल प्राय: सभी प्राणी-स्त्री-पुरुष धन दौलत की चाह एवं अशांति आदि को दूर करने के लिए मिथ्या देवी देवताओं की आराधना व्रत आदि करने लगते है जबकि जैन धर्म की देशना को प्राप्त कर हर प्राणी यह जानता है कि सम्यक्त्व के समान कोई दूसरा मित्र नहीं है और मिथ्यात्व के समान कोई दूसरा शत्रु नहीं हैं। आगमोक्त विधि से किया गया यह स्तोत्र एवं ऋषिमण्डल विधान इच्छित कार्य की सिद्धि के साथ विशेष चमत्कारिक फल को प्रदान करने वाला है। श्रद्धापूर्वक समय-समय पर भक्तगण इस स्तोत्र एवं पूजा-विधान को करते रहेगे तो उन्हें इच्छित वस्तु की अवश्य प्राप्ति होगी। इसी भावना के साथ गुरुवर के श्री चरणों में इस महान उपकार के लिए बारम्बार नमोस्तु-3

-मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

श्री दि. जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जी-फागी

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम॥

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरे अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां.....।।पुष्पांजलि क्षिपामि।।

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। (जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वादः

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं।।
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध॥
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल॥
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम॥
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे॥
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें॥
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया॥
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी॥
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्यं

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्यं महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्यं

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्यं महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्यं

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्यं महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्यं

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्यं महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक है॥
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान॥1॥

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरु के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान॥
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान॥2॥

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान॥
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान॥3॥

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर के नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ॥

जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त! पुराण पुरुष हे!, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीँ विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवलज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् करना चाहिये।

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।

शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।
शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।
शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति...।।7।।

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।
शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ति...।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्यं

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।

सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

ऋषि मण्डल स्तोत्र

(शम्भू छंद)

आदि ''अ'' अक्षर ह अन्त, ख से लेकर व पर्यन्त।
रेफ में अग्नि ज्वाला नाद, बिन्दु युक्त अर्हं उत्पाद।।1।।

अग्नी ज्वाला सम आक्रान्त, मन का मल करता उपशांत।
हृदय कमल पर दैदीप्यमान, वह पद निर्मल नमूँ महान।।2।।

नमो अर्हद्भ्यः ईशेभ्यः, ॐ नमो नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमो सर्व सूरिभ्यः, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः।।3।।

ॐ नमो सर्व साधुभ्यः, ॐ नमः तत्त्व दृष्टिभ्यः।
ॐ नमः शुद्ध बोधेभ्यः, ॐ नमः चारित्रेभ्यः।।4।।

अर्हन्तादिक पद ये आठ, स्थापन करके दिश आठ।
निज निज बीजाक्षर के साथ, लक्ष्मीप्रद हैं सुखकर नाथ।।5।।

पहला पद सिर रक्षक जान, द्वितीय मस्तक का पहिचान।
तीजा पद नेत्रों का मान, करें चतुष्पद नाशा त्राण।।6।।

पञ्चम मुख का रक्षक होय, ग्रीवा का छठवाँ पद सोय।
सप्तम पद नाभि का जान, अष्टम द्वय पद का पहिचान।।7।।

प्रणवाक्षर ॐ पुनः हकार, रेफ बिन्दुयुत हो शुभकार।
द्वय तिय पञ्चम षष्ठी जान, सप्त अष्ट दशा द्वादश मान।।8।।

ह्रीं नमः विधि के अनुसार, मंत्र बने शुभ अतिशयकार।
ऋषि मण्डल स्तवन शुभकार, श्रेयस्कर है मंत्र अपार।।9।।

जाप–ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

सिद्ध मंत्र में बीजाक्षर नव, अष्टादश शुद्धाक्षर वान।
भक्ती युत आराधक को शुभ, फलदायी है मंत्र महान।।10।।

जम्बूद्वीप लवणोदधि वेष्टित, जम्बू वृक्ष जिसकी पहचान।
अर्हदादि अधिपति वसु दिश में, वसु पद शोभित महिमावान॥11॥

जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरु, लक्ष कूट युत शोभावान।
ज्योतिष्कों के ऊपर ऊपर ऊपर, घूम रहे हैं श्रेष्ठ विमान॥12॥

ह्रीं मंत्र स्थापित जिस पर, अर्हंतों के बिम्ब महान।
निज ललाट में स्थित कर मैं, नमूँ निरंजन सतत् प्रधान॥13॥

(चौपाई)

जिन अज्ञान रहित घर गाए, अक्षय निर्मल शांत कहाए।
बहुल निरील सारतर स्वामी, निरहंकार सार शिवागमी॥14॥

अनुद्धूत शुभ सात्विक जानो, तैजस बुद्ध सर्वरीसम मानो।
विरस बुद्ध स्फीत कहाए, राजस मत तामस कहलाए॥15॥

परपरा पर कहलाए, सरस विरस साकार बताए।
निराकार परापर जानो, परातीत पर भी पहिचानो॥16॥

सकल निकल निर्भृत कहलाए, भ्रांति वीत संशय बिन गाए।
निराकांक्ष निर्लेप बताए, पुष्टि निरंजन प्रभु कहलाए॥17॥

ब्रह्माणमीश्वर बुद्ध निराले, सिद्ध अभंगुर ज्योती वाले।
लोकालोक प्रकाशक जानो, महादेव जिनको पहिचानो॥18॥

बिन्दू मण्डित रेफ कहाया, चौथे स्वर युत शांत बताया।
ह्रीं बीज वर्ण सुखदायी, ध्यान योग्य अर्हत् के भाई॥19॥

एक वर्ण द्विवर्ण गिनाए, त्रिवर्णक परापरं पर शब्दों वाले।
पञ्चवर्ण महावर्ण निराले, परापरं पर शब्दों वाले।20॥

उन बीजों में स्थित जानो, वृषभादि जिन उत्तम मानो।
निज-निज वर्णयुक्त बिन गाए, सब ध्यातव्य यहाँ बतलाए॥21॥

'नाद' चंद्र सम श्वेत बताया, 'बिन्दु' नील वर्ण सम गाया।
'कला' अरुण सम शांत कहाई, 'स्वर्णाभा' चउदिश में गाई।।22।।

हरित वर्ण युत 'ई' शुभ जानो, 'ह र' स्वर्ण वर्ण मय जानो।
वर्णानुसार प्रभु को ध्याएँ, चौबिस जिन पद शीश झुकाएँ।।23।।

चन्द्र पुष्प जिन श्वेत बताए, नाद के आश्रय से शुभ गाए।
नेमि मुनिसुव्रत जिन जानो, बिन्दु मध्य में प्रभु को मानो।।24।।

कला सुपद शुभ है शिवगामी, वासुपूज्य पद्मप्रभ स्वामी।
ई स्थित सोहे मनहारी, श्री सुपार्श्व पार्श्व अविकारी।।25।।

शेष सभी तीर्थंकर जानो, ह र के आश्रय भी मानो।
माया बीजाक्षर में गाए, चौबिस तीर्थंकर बतलाए।।26।।

राग-द्वेष गत मोह कहाए, सर्व पाप से वर्जित गाए।
सर्वलोक में जिन शुभकारी, सदा सर्वदास मंगलकारी।।27।

(चौपाई)

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, सर्पों से न बाधा होय।।28।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, नागिन से न बाधा होय।।29।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, गोहों से न बाधा होय।।30।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, वृश्चिक से न बाधा होय।।31।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, काकिनि से न बाधा होय।।32।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, डाकिनि से न बाधा होय।।33।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, साकिनि से न बाधा होय।।34।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, राकिनि से न बाधा होय।।35।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, लाकिनि से न बाधा होय।।36।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, शाकिनि से न बाधा होय।।37।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, हाकिनि से न बाधा होय।।38।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, भैरव से न बाधा होय।।39।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, राक्षस से न बाधा होय।।40।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, व्यंतर से न बाधा होय।।41।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, भेकस से न बाधा होय।।42।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, लीनस से न बाधा होय।।43।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, मम ग्रह से न बाधा होय।।44।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, चोरों से न बाधा होय।।45।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, अग्नि से न बाधा होय।।46।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, श्रृंगिण से न बाधा होय।।47।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, दंष्ट्रिण से न बाधा होय।।48।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, रेलप से न बाधा होय।।49।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, पक्षी से न बाधा होय।।50।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, मुद्गल से न बाधा होय।।51।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, जृंम्भक से न बाधा होय।।52।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, मेघों से न बाधा होय।।53।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, सिंहों से न बाधा होय।।54।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, शूकर से न बाधा होय।।55।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, चीतों से न बाधा होय।।56।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, हाथी से न बाधा होय।।57।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, राजा से न बाधा होय।।58।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, शत्रु से न बाधा होय।।59।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, ग्रामिण से न बाधा होय।।60।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, दुर्जन से न बाधा होय।।61।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, व्याधि से न बाधा होय।।62।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढका हुआ मैं सोय, सब जन से न बाधा होय।।63।।

(चौपाई)

श्री गौतम की मुद्रा प्यारी, जग में श्रुत उपलब्धी कारी।
उससे प्रखर ज्योति को पाए, अर्हत् सर्व निधीश्वर गाए।।64।।

देव सभी पाताल निवासी, स्वर्ग लोक पृथ्वी के वासी।
देव स्वर्ग वासी शुभकारी, रक्षा मिल सब करें हमारी।।65।।

अवधि ज्ञान ऋद्धि के धारी, परमावधि ज्ञानी अविकारी।
दिव्य मुनि सब ऋद्धिधारी, रक्षा वह सब करें हमारी।।66।।

भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, वैमानिक के रहे प्रवासी।
श्रुतावधि देशावधि धारी, योगी के पद ढोक हमारी।।67।।

परमावधि सर्वावधि धारी, संत दिगम्बर हैं अविकारी।
बुद्धि ऋद्धी सर्वौषधि पाए, ऋद्धीधारी संत कहाए।।68।।

बल अनन्त ऋद्धि धर पाए, तप्त सुतप उन्नति बढ़ाए।
क्षेत्र ऋद्धि रस ऋद्धि धारी, ऋद्धि विक्रिया धर अविकारी॥69॥

तप सामर्थ्य मुनी अविकारी, क्षीण सद्म महानस धारी।
यतीनाथ जो भी कहलाते, उनके पद में हम सिरनाते॥70॥

तारक जन्मार्णव शुभकारी, दर्शन ज्ञान चारित्र के धारी।
भव्य भवन्त रहे जग नामी, इच्छित फल पावें हे स्वामी॥71॥

(शम्भू छंद)

ॐ श्री ह्री कीर्ति लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती।
क्लिन्नाजिता मदद्रवा धृति, नित्या विजया जयावती॥72॥

कामांगा कामबाणा नन्दा, नन्दमालिनी अरु माया।
कलिप्रिया रौद्री मायाविनी, काली कला करें छाया॥73॥

रक्षाकारी महादेवियों, जिन शासन की सर्व महान।
कांति लक्ष्मी धृति मति दें, क्षेम करें सब जगत प्रधान॥74॥

दुर्जन भूत पिशाच क्रूर अति, मुद्गल हैं वेताल प्रधान।
वह प्रभाव से देव-देव के, सब उपशान्त करें गुणगान॥75॥

श्री ऋषि मण्डल स्तोत्र यह, दिव्य गोप्य दुष्प्राप्त महान।
जिन भाषित है तीर्थनाथ कृत, रक्षा कारक महिमावान॥76॥

रण अग्नि जल दुर्ग सिंह गज, का संकट हो नृप दरबार।
घोर विपिन श्मशान में भाई, रक्षक मंत्र रहा मनहार॥77॥

राज्य भ्रष्ट को राज्य प्राप्त हो, सुपद भ्रष्ट पद पाते लोग।
संशय नहीं हैं इसमें पावें, लक्ष्मी हीन लक्ष्मी का योग॥78॥

भार्यार्थी भार्या पाते हैं, पुत्रार्थी पाते सुत श्रेष्ठ।
धन के इच्छुक धन पाते हैं, नर जो स्मरण करें यथेष्ट॥79॥

स्वर्ण रजत कांसे पर लिखकर, उसे पूजते जो भी लोग।
शाश्वत महा सिद्धियों का वह, अतिशय पाते हैं संयोग॥80॥

शीश कण्ठ बाहू में पहनें, भूर्जपत्र पर लिखिये मंत्र।
भय विनाश होते हैं उनके, जो धारें अतिशय शुभ यंत्र॥81॥

भूत-प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य सब, या पिशाच आदि कृत कष्ट।
वात पित्त कफ आदि रोग भी, हो जाते हैं सारे नष्ट॥82॥

भूर्भुवः स्वः त्रय पीठ स्थित, शाश्वत हैं जिनबिम्ब महान।
उनके दर्शन वन्दन स्तुति, श्रेष्ठ सुफल हैं जगत प्रधान॥83॥

महा स्तोत्र यह गोपनीय शुभ, जिस किसको न देना आप।
मिथ्यात्वी को देने से हो, पद-पद पर शिशु वध का पाप॥84॥

चौबिस जिन की पूजा द्वारा, आचाम्लादि तप के योग।
अष्ट सहस्र जापकर विधिवत्, कार्य सिद्ध करते हैं लोग॥85॥

प्रतिदिन प्रातः अष्टोतर शत्, इसी मंत्र का करते जाप।
सुख-सम्पत्ति पाते इच्छित, रोगों का मिटता संताप॥86॥

प्रातः आठ माह तक नित प्रति, इस स्तोत्र का करके पाठ।
तेज पुञ्ज अर्हन्त बिम्ब के, दर्शन से हों ऊँचे ठाठ॥87॥

सप्त भवों में भाव समाधि, जिन दर्शन से होते मुक्त।
परमानन्द प्राप्त करते हैं, होते शाश्वत सुख से युक्त॥88॥

दोहा– यह स्तोत्र महास्तोत्र है, सब संस्तुतियों युक्त।
पाठ जाप स्मरण कर, दोषों से हो मुक्त॥
कर स्तोत्र महास्तोत्र का, पाठ स्मरण जाप।
दोषों से मुक्ति मिले, 'विशद' मिटे संताप॥

॥इति ऋषि मण्डल स्तोत्र समाप्त॥

ऋषि मण्डल पूजन

स्थापना

चौबिस जिन वसु वर्ग शुभ, पंच गुरू त्रय रत्न।
चैत्यालय चऊ देव के, चार अवधि कर यत्न।।
अष्ट ऋद्धि चउ बीस सुरि, पूजित जिन अरिहंत।
ह्रीं तीन दिग्पाल दस, युक्त यंत्र गुणवन्त।
ऋषि मण्डल में देवियाँ, और देव परिवार।
आकर के रक्षा करें, पूजूँ विधि अनुसार।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अर्हंतादि पंचपद, दर्शनज्ञान चारित्र रूपरत्नत्रय, चार प्रकार अवधि धारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि, चौबीस सूर, तीन ह्रीं, अर्हंत बिम्ब, यन्त्र सम्बन्धी परमदेव समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भव ताप नशाने आए।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्यं चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– काल अनादी सिद्ध हैं, ऋषिवर ऋद्धि महान।
शांतीधारा कर यहाँ, करते हम गुणगान।।
(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा– ऋषिमण्डल पूजा कही, जग में अपरम्पार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने भव से पार।।
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

दोहा– ऋषि मण्डल शुभ यंत्र के, जो हैं शुभ आधार।
पुष्पाञ्जलिकर पूजते, पाने भव से पार॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(पाइता छन्द)

तीर्थंकर चौबिस गाए, जो शिव पदवी को पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, यह पावन अर्घ्यं चढ़ाते॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय वृषभादि-चतुर्विंशति तीर्थंकर-परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क' वर्गादिक शुभ जानो, श्रुत के हेतू हैं मानो।
हो यंत्र की रचना भाई, जो हैं सद्दर्श प्रदायी॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टवर्ग कवर्गादि शाषासाहा ह्मर्ब्यूं परमयंत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी पाँच बताए, जो जग में पूज्य कहाए।
हम अर्हन्तादिक ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय पंचपरमेष्ठि-परम देवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सद्दर्श ज्ञान शुभ गाया, पावन चारित्र कहाया।
हम रत्नत्रय को पाएँ, मुक्ती पथ को अपनाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूपरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर भावन ज्योतिषी व्यन्तर, देवेन्द्र कल्प के मनहर।
इनके गृह में प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय भवनेन्द्र व्यंतरेन्द्र ज्योतिषीन्द्र कल्पेन्द्र चतुः प्रकार देवगृहेषु श्रीजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधि ज्ञान जगाए, सर्वा-परमावधि पाए।
सुर चउ निकाय के जानो, हों अवधि ज्ञानी मानो॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय चतुः प्रकार अवधिधारक अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अष्ट ऋद्धियाँ पावें, जो तप द्वारा प्रगटावें।
उनको यह भी ना भावें, वे तजकर शिव पद पावे।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टऋद्धि सहित मुनिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री आदि देवियाँ जानों, जिन भक्त सभी हैं मानों।
जिन भक्ती करने आओ, शुभ यज्ञ भाग तुम पाओ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय श्री आदि चतुर्विंशति देवेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ब्रह्म वाचक ह्रीं कहाये, कारण शक्ती के गाए।
त्रय ह्रीं पूजते भाई, जो हैं कल्याण प्रदायी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय त्रिकोणमध्येत्रय ह्रीं संयुक्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवर छियालिस गुणधारी, होते हैं कल्मषहारी।
जिनबिम्ब श्रेष्ठ मनहारी, हम पूज रहे शुभकारी।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वोद्रव विनाशन समर्थाय अष्टादश दोष रहिताय छियालीस गुण युक्ताय अरहन्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्पाल दशों दिश जानो, जिनगृहों में श्री जिन मानो।
श्रीजिन पद पूज रचाते, हम उनको यहाँ बुलाते।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थेभ्यो दशदिग्पालेभ्यो जिनभक्ति युक्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– चौबीसी जिन वर्ण शुभ, परमेष्ठी शुभकार।
रत्नत्रय वसु ऋद्धियाँ, पूज रहे मनहार।।

(शम्भू छन्द)

ऋषि मण्डल शुभ यंत्र लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
जिसमें राजित श्रेष्ठ महाशुभ, ह्रीं अक्षर महिमाकारी।।
यंत्रराज का है नायक जो, चौबिस जिनवर युक्त कहा।
अ आ इ ई आदिक स्वर में, सिद्ध वर्ण संयुक्त रहा।।1।।
क आदिक हैं वर्ण पंच शुभ, उनका भी इसमें स्थान।
ह भ आदिक बीजाक्षर शुभ, आठों का है कथन महान।।
पाँचों परमेष्ठी शोभित हैं, रत्नत्रय भी रहा प्रधान।
सर्व ऋषीश्वर शोभित होते, तप बल धारी ऋद्धीवान।।2।।

श्रुतावधी धर चारों मुनिवर, जिनके गुण हैं अपरम्पार।
चउ निकाय के देव शरण में, भक्ती करते बारम्बार॥
श्री ह्री आदिक सभी देवियाँ, सेवा करें चरण में आन।
अन्तिम वलय में घेरे जानों, ज्यों नगरी में कोटा जान॥3॥
विधि सहित जो पूजा करते, पाते वह सुख-शांति महान।
महिमा इसकी जग से न्यारी, कठिन रहा जिसका गुणगान॥
सर्व दुखों को हरने वाली, पूजा कही है अपरम्पार।
मंत्र जाप शुभ करने वाला, शीघ्र होय इस भव से पार॥4॥
मुक्तिश्री को जपने वाले, करते हैं शिव पद में वास।
अक्षयश्री को पा जाते हैं, होते तारण तरण जहाज॥
ऋषि मण्डल जग श्रेष्ठ कहा है, तीनों लोक में रहा प्रसिद्ध।
विघ्न हरण मंगल कारक है, होय भावना मन की सिद्ध॥5॥

दोहा– ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की, पूजा अपरम्पार।
सुख-शांती पावे 'विशद', करके बारम्बार॥

इत्याशीर्वाद

दोहा– ऋषियों के चरणों नमन, करते बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजते, जिन पद मंगलकार॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर सप्त ऋषि पूजा

स्थापना

वर्तमान के तीर्थंकर हैं, ऋषभादिक चौबीस महान।
सप्त प्रकार के ऋषियों ने भी, जिनका किया विशद गुणगान॥
पूरब धारी शिक्षक ऋषिवर, अवधिज्ञान धारी गुणवान।
केवलज्ञानी विक्रियाधारी, विपुलमती वादी विद्वान॥

दोहा– चौबिस जिनवर के ऋषी, पावन सप्त प्रकार।
करते हैं आह्वान हम, जिनका बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चारण ऋषि पूर्वधर, शिक्षक, अवधिज्ञानी, केवलज्ञानी, विक्रियाधारी,

विपुलमति, वादि श्रीसप्त ऋषीश्वराः। अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं!! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं!!!

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ।
जन्मादिक रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए।
संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्यः चंदनं निर्व. स्वाहा।

हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
गुरु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्यः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।
गुरु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्यः पुष्प निर्व. स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये।
गुरु क्षुधा रोग नश जाए, भव से मुक्ति मिल जाए।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्य: नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए।
गुरु मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्य: दीपं निर्व. स्वाहा।

ताजी यह धूप बनाएँ, अग्नी से धूम उड़ाएँ।
गुरु कर्म नाश हो जाए, प्राणी भव से तिर जाए।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्य: धूपं निर्व. स्वाहा।

गुरु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाएँ।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्य: फलं निर्व. स्वाहा।

गुरु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्यं बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाए।।
जय सप्त ऋषी जिन स्वामी, तुम हो गुरु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, गुरु चरणों शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित सर्वऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– काल अनादी सिद्ध हैं, ऋषिवर ऋद्धि महान।
शांतीधारा कर यहाँ, करते हम गुणगान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा– उपवन से निर्वाण के, लाए हैं हम फूल।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, कर्म होंय निर्मूल॥

।।दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा– रत्नत्रय त्रय लोक में, ऋद्धीधार त्रिकाल।
जिनकी गाते आज हम, भाव सहित जयमाल॥

(तोटक छन्द)

जय आदिनाथ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
अजितनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़ जोड़ द्वय हाथ नमस्ते॥
सम्भव भव हर देव नमस्ते, अभिनन्दन जिनदेव नमस्ते।
सुमतिनाथ के पाद नमस्ते, पदम प्रभु पद माथ नमस्ते॥
श्री सुपार्श्व जिनराज नमस्ते, चन्द्र प्रभु पद आज नमस्ते।
पुष्पदन्त गुणवन्त नमस्ते, शीतल जिन शिवकंत नमस्ते॥
जय श्रेयनाथ भगवंत नमस्ते, वासुपूज्य धीवन्त नमस्ते।
विमलनाथ जिनदेव नमस्ते, प्रभु अनन्त पद सेव नमस्ते॥
धर्मनाथ जिनदेव नमस्ते, शांतिनाथ पद सेव नमस्ते।
जय-जय कुन्थुनाथ नमस्ते, जय अरहनाथ पद साथ नमस्ते॥
जय मल्लिनाथ भगवान नमस्ते, मुनिसुव्रत व्रतवान नमस्ते।
जय नमीनाथ पद माथ नमस्ते, जय नेमिनाथ जिन साथ नमस्ते।
जय पार्श्वनाथ धर धीर नमस्ते, तीर्थंकर महावीर नमस्ते।
तीर्थंकर पद पाद नमस्ते, तीन लोक विख्यात नमस्ते॥
पूरवधर ऋषिराज नमस्ते, शिक्षा शिक्षावान नमस्ते।
अवधि ज्ञानी संत नमस्ते, केवली जिन भगवन्त नमस्ते॥
विक्रिया धार ऋशीष नमस्ते, विपुलमती सुमुनीश नमस्ते।
यतिवर वादी सर्व नमस्ते, शाश्वत सारे पर्व नमस्ते॥
करते देवी देव नमस्ते, पूजा करें सदैव नमस्ते।

जय चन्दन शुभ लाय नमस्ते, अक्षत पुष्प मँगाए नमस्ते॥
चरु शुभ दीप जलाय नमस्ते, श्री फल आदि चढ़ाय नमस्ते।
पावन अर्घ्यं बनाय नमस्ते, श्री जिन चरण चढ़ाय नमस्ते॥
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र नमस्ते, संकटहारी तंत्र नमस्ते।
विद्यार्थी विज्ञान नमस्ते, निर्गुण हो गुणवान नमस्ते॥
उपकारी जगनाथ नमस्ते, भक्ति भाव के साथ नमस्ते।
श्रद्धा के आधार नमस्ते, व्रतदायक अनगार नमस्ते॥
मुक्ती पथ दातार नमस्ते, भव से करते पार नमस्ते।
हमको देना साथ नमस्ते, 'विशद' झुकाते माथ नमस्ते॥

(अडिल छंद)

ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र परम हितकार है।
भव-भव के दुखों का मैटनहार है॥
जीवों को सुख-शान्ति प्रदायक मानिए।
शिवपद दाता श्रेष्ठ 'विशद' पहिचानिए॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की।
बने श्री का नाथ, जो नित प्रति पूजा करें॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– तीर्थंकर के साथ में, ऋषिवर सप्त प्रकार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने भव दधिपार॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ जी का अर्घ्यं

(मोतियादाम छन्द)

कहाए आदिनाथ भगवान, जगाए पावन केवल ज्ञान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

ऋषभदेव के समवशरण में, नित प्रति मंगल गावें।
पौने पाँच हजार पूर्वधर, मुनी शरण को पावें।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवतीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् अधिक सप्तशत्युत्तरचतु: सहस्त्र पूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हजार डेढ़ सौ मुनिवर, शिक्षक मुनि कहलावें।
सुर नर जिनकी पूजा करके, मन आनंद मनावें।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवतीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिकएकशत्युत्तरचतु:सहस्र शिक्षक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार मुनि ऋषभदेव के, समवशरण में गाए।
इनको पूजे भव सागर से, मुक्ति शीघ्र मिल जाए।।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ नव सहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर बीस हजार केवली, ऋषभदेव के गाए।
इनको मन से जो भी ध्याए, त्रिभुवन पति हो जाए।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति सहस्र केवलज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस सहस छह शतक मुनीश्वर, विक्रिया ऋद्धी धारी।
ऋषभदेव के समवशरण में, जानों तुम अविकारी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ -षट्शत्युत्तरविंशतिसहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े बारह सहस मुनीश्वर, विपुलमती थे ज्ञानी।
ऋषभदेव की महिमा गाते, वीतराग विज्ञानी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ -पञ्चाशत्अधिकसप्तशत्युत्तद्वादश सहस्रंविपुलमति ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े बारह-सहस जानिए, वादी मुनिवर भाई।
उनकी पूजा समवशरण में, होती सन्मति दायी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ -पञ्चाशदधिकसप्तशत्युत्तरद्वादश सहस्र सप्त शत वादि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- सहस चुरासी श्रेष्ठतम, ऋषभ देव के साथ।
शत शत वन्दन हम करें, चरण झुकाएँ माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुरशीति: सहस्र सर्वऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शान्तेय शांतिधारा-पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

श्री अजितनाथ जी का अर्घ्यं

कहाए अजित नाथ जिनराज, कर्म का जीते सकल समाज।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

साढ़े तीन हजार पूर्वधर, अजित नाथ के गाये हैं।
समवशरण में अर्चा करने, भाव सहित हम आए हैं।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक सप्तशत्युत्तर त्रिसहस्रपूर्वधरऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्कीस सहस छह शतक मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी।
अजित नाथ के साथ बताए, ज्ञानी ध्यानी अविकारी॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ-षट्शत्युत्तर एकविंशतिसह-षट्शत शिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नौ हजार मुनि चार सौ, अजित नाथ के साथ।
समवशरण में शोभते, चरण झुकाएँ माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥10॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ चतुशत्युत्तर नवसहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में केवली, मुनिवर बीस हजार।
अजित नाथ को पूजते, पावे भवदधि पार॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरण विंशति सहस्र केवलज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस सहस अरु चार सौ, विक्रिया धारी साथ।
अजितनाथ प्रभु के सदा, चरण झुकाते माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुःशत्युत्तर विंशति सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती बारहसहस, चऊ शत और पचास,।
समवशरण में अजित जिन, के संग कीन्हे वास॥

तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिचतु:शत्युत्तर द्वादशसहस्र विपुलमति-ज्ञानीऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सहस्र अरु चार सौ, थे वादी मुनिराज।
अजितनाथ के साथ में, करें पूर्ण सब काज॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत्युत्तर द्वादश सहस्र वादि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अजित नाथ के साथ में, एक लाख मुनिराज।
पूजें तिनको अर्घ्यं से, शुभ दिन पावें आज॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ एकलक्ष सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलि:।

श्री सम्भवनाथ का अर्घ्यं

प्रभू सम्भव जिन की जयकार, बोलते सुर नर बारम्बार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

दो हजार शत एक पचास, मुनी पूर्वधर रहते पास।
सम्भव जिनकी भक्ति विशेष, करें भाव से जो अवशेष॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥15॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरण पञ्चाशदधिक एकशत्युत्तर द्वि सहस्रं पूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक लाख उन्तीस हजार, तीन सौ मुनि शिक्षक सुखकार।
सम्भव जिनके रहते पास, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज।।16।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शताधिक एकोनत्रिंशत् सहस्रोत्तर एकलक्ष शिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार छह सौ मुनिराज, अवधिज्ञान का पाये ताज।
सम्भव जिनके गाए खास, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज।।17।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्शताधिक् नवसहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी श्रेष्ठ मुनीश, पन्द्रह सहस ज्ञान के ईश।
सम्भव जिनके रहते पास, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज।।18।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चदशसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधर उन्नीस हजार, और आठ सौ मुनि हितकार।
समवशरण में सम्भव नाथ, उनका सभी निभाते साथ।।
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज।।19।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ -अष्टशत्युत्तरएकोनविंशतिः सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिक डेढ़ सौ बारह हज्जार , विपुलमति मुनि मंगल कार।
समवशरण में सम्भव नाथ, जिन पद सभी झुकाते माथ।।
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज।।20।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र एकशतविपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनि बारह हज्जार, कर्म निर्जरा करें अपार।
तीर्थकर जिन कर भव नाश, आत्मज्ञान का करें प्रकाश।।
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्यं चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज।।21।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– लाख दोय मुनिवर सदा, संभव जिन के पास।
हाथ जोड़ वन्दन करें, पूरें मन की आस।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्विलक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।

श्री अभिनन्दननाथ जी का अर्घ्यं

प्रभू अभिनन्दन हुए महान् करें, जिनवर का सब यशगान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथस्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अभिनन्दन के साथ में, मुनि वर ढाई हजार,
श्रेष्ठ पूर्व धारी हुए, ज्ञानी मंगलकार।
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने भव दधि पार।।22।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशताधिक द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस तीस दो लाख अरु, पञ्चाशत मुनि राज,
अभिनन्दन के साथ में, शिक्षक करते नाज
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने भव दधि पार।।23।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक त्रिंशत्सहस्रोत्तर द्विलक्ष शिक्षक–मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार अरु आठ सौ, अवधिज्ञान के नाथ।
अभिनंदन जिनराज पद, सदा झुकाएँ माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पावे भवदधि पार॥24

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन नाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशत्युत्तरनवसहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में केवली, षोडश सहस मुनीश।
अभिनंदन की वन्दना, करते सभी ऋशीष॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने भवदधि पार॥25॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरण्स्थ षोडश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर उन्नीस सहस थे, अभिनन्दन के साथ।
श्रेष्ठ विक्रिया धारते, चरण झुकाते माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने भवदधि पार॥26॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनविंशति सहस्र विक्रियाधारिमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्कीस सहस छह सौ तथा, जानो अधिक पचास।
विपुल मती ज्ञानी सभी, अभिनंदन के पास॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने भवदधि पार॥27॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथतीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक षट्शत्युत्तर एकविंशतिः सहस्रंविपुलमति ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सहस वादी मुनी, अभिनंदन के साथ।
आरोग्य श्री वृद्धि करो, हम पूजें मुनिनाथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने भवदधि पार॥28॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकसहस्र वादि-मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– तीन लाख मुनिराज थे अभिनन्दन के साथ।
पुष्पों से पूजें सदा, चरण झुकाएँ माथ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिलक्ष सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलि।

श्री सुमतिनाथ जी का अर्घ्यं

सुमति जिनवर हैं शुभ मतिमान, करें हम जिनवर का शुभ ध्यान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्यं।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्दः जोगीरासा)

पूरवधर दो सहस चार सौ, सुमतिनाथ के जानों।
गणधर पूजित समवशरण की, महिमा अद्भुत मानों।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।29।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुश्शत्युत्तर द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो लख चौवन सहस तीन सौ, पंचाशत शुभ जानों।
सुमतिनाथ के समवशरण में, शिक्षक पावन मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।30।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक त्रिशत्युत्तर पञ्चपञ्चाशत् सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह सहस अवधिज्ञानी शुभ, सुमतिनाथ के जानो।
जय-जय-जय-जय भक्ति रचावें, सुरपति यह ही मानो।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।31।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकादश सहस्र अवधिज्ञानीमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।31।।

उभय श्री को पाने वाले, सुमतिनाथ को जानों।
प्रभु के तेरह सहस केवली, समवशरण में मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।32।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयोदश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।32।।

रहे अठारह सहस चार सौ, विक्रियाधर मुनिराई।
परमानंद सु शिव सुखकारक, सुमतिनाथ शिवदाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।33।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुश्शत्युत्तर अष्टादश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।33।।

विपुलमती दस सहस चार सौ, सुमतिनाथ के भाई।
भव्यबन्धु कहलाते जिनवर, सुमतिनाथ शिव दायी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।34।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुश्शत्युत्तर दश सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।34।।

दस हजार चउ सौ पञ्चाशत्, मुनि वादी सुखदाई।
सुमतिनाथ के समवशरण में, ऋषी कहे श्रुतदाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।35।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् अधिक चतुश्शत्युत्तर दस सहस्रवादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।35।।

पूर्णार्घ्यं

दोहा– तीन लाख विंशति सहस, मुनिवर रहे अनूप।
सुमतिनाथ को पूजकर, पाना निज स्वरूप।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशतिः सहस्रोत्तर त्रिलक्ष सर्वं मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।5।।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री पद्मप्रभु जी का अर्घ्यं

पद्म प्रभ गाए पद्म समान, पूजते जिन पद सब विद्वान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

पूरवधर दो सहस तीन सौ, पद्मनाथ के जानो।
स्वयं आत्मभू पद से भूषित, पद्मनाथ को मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।36।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।36।।

रहे लाख दो सहस उनहत्तर, मुनि शिक्षक सुखकारी।
पद्मनाथ के समवशरण में, मुनिगण मंगलकारी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।37।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनसप्ततिः सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस हजार मुनि अवधिज्ञानी, पद्मनाथ गुण गावें।
समवशरण में जो भवि आवें, प्रभु को शीश झुकावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।38।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ दश सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह हजार मुनि केवल ज्ञानी, सब विघ्नों को टारें।
पद्मनाथ की पूजा करके, कर्म कालिमा जारें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।39।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह सहस आठ सौ साधू, ऋद्धि विक्रिया पाये।
पद्मनाथ के समवशरण में, रोग शोक हर गाये॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥40॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर षोडश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती दस सहस तीन सौ, पद्मनाथ के गाये।
जग में सुन्दर पद्मनाथ जिन, अघहारी कहलाए।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥41॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ शतत्रयोत्तर दस सहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाथ के वादी मुनिवर, जग में प्रीति करावें।
मुनिवादी नौ हजार छह सौ, प्रभु को शीश झुकावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥42॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर नवसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

तीन लाख त्रिशत् सहस, मुनिवर जिनके पास।
पद्मनाथ को हम जजें, शिव रमणी की आस॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ सर्व त्रिंशत् सहस्रोत्तर त्रिलक्ष मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री सुपार्श्वनाथ जी का अर्घ्यं

सुपारस जिन हैं मंगलकार, नहीं महिमा का जिनकी पार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे पूर्वधर प्रभु सुपार्श्व के, समवशरण में भाई।
दो हजार शुभ तीस कहे हैं, आगम में सुखदाई॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी।43॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिंशत् अधिक द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक द्वि लख सहस चवालिस, नौ सौ बीस बताए।
जिन सुपार्श्व के समवशरण में, अर्चा करने आए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी।44॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति अधिक नवशत्युत्तर चतुश्चत्वारिंशत् सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार मुनि अविधज्ञानी, प्रभु सुपार्श्व के जानों।
समवशरण में पूजा करके, होय सदा सुख मानो॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी।45॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवसहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर ग्यारह सहस केवली, समवशरण में जानों।
प्रभु सुपार्श्व के पाद-पद्म में, मुक्ति मिले यह मानों॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी।46॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े पन्द्रह सहस तीन सौ, विक्रियाधारी आवें।
प्रभु सुपार्श्व के समवशरण में, जिन गुण संपद पावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी।47॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर पञ्चदश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार इक सौ पंचाशत्, विपुलमती कहलाए।
समवशरण में आकर सब ही, प्रभु सुपार्श्व गुण गाए।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद के अनुरागी।।48।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक एकशत्युत्तर नवसहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ सहस छह सौ मुनि वादी, समवशरण गुण गावें।
प्रभु सुपार्श्व का दर्शन करके, मन में हर्ष बढ़ावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी।।49।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्शत्युत्तर सहस्र वादिमुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

तीन लाख मुनिवर कहे, जिन सुपार्श्व के साथ।
मुक्ती पद के हेतु हम, पूज रहे हे नाथ!।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिलक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री चन्द्रप्रभ जी का अर्घ्यं

चन्द्रप्रभ शीतल चन्द्र समान, करें हम जिनवर का गुणगान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ की पूजा करने, समवशरण में माने।
मुनिवर चार हजार पूर्वधर, कर्म शत्रुदल हाने।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।50।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष दोय दश सहस चार सौ, शिक्षक गण जो आवें।
चन्द्रनाथ के समवशरण में, सहसनाम गुण गावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।51।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: शत्युत्तर दश सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार मुनि अवधिज्ञानी, महाव्रती शुभ जानो।
चन्द्रनाथ गुण माला गावें, शिवपथ गामी मानो।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।52।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस अठारह रहे केवली, चन्द्रनाथ के भाई।
धर्मध्यान तप करके सब ने, शिव की पदवी पाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।53।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ की पूजा करके, समवशरण मुनि सोहें।
छह सौ विक्रियाधारी मुनिवर, प्रभु सन्मुख मन मोहें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।54।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्शत् विक्रिया धारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र नाथ के विपुल मती मुनि, अष्ट सहस बतलाए।
समवशरण में ध्यान लगाकर, कर्म शत्रु विनसाए।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।55।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट सहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ के समवशरण में, वृषबृद्धी नित पावें।
सात हजार जु वादी मुनिवर, परम पूज्य कहलावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।56।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (सोरठा छन्द)

चन्द्रनाथ के पास, ढाई लाख मुनिवर कहे।
मुक्ति रमा की आस, हो मुनि पद पूजें सदा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् सहस्रोत्तर द्वि लक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री पुष्पदन्त जी का अर्घ्यं

सुविधि जिनवर विधि के अनुसार, मोक्ष पद पाए अपरम्पार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के साथ पूर्वधर, मुनि पन्द्रह सौ आवें।
तीर्थंकर की भक्ती कर के, नित सौभाग्य जगावें।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।57।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक लख पचपन सहस पंचशत, शिक्षक मुनि शुभ जानो।
पुष्पदंत के समवशरण में, सकल दोष हर मानो।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।58।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशताधिक पंचपञ्चाशत् सहस्रोत्तर एक लक्ष शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ हजार चार सौ मुनिवर, अवधिज्ञानी जानों।
पुष्पदंत के समवशरण में, मंगलकारी मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।59।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुरशीति शत अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात हजार पाँच सौ भाई, केवलज्ञानी जानो।
तीर्थंकर की महिमा गायें, त्रिभुवन स्वामी मानो।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।60।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर सप्तसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरह हजार विक्रियाधारी, समवशरण मधि गाये।
पुष्पदंत की पूजा करके, मन आनन्दित पाये।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।61।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयोदश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात हजार पाँच सौ मुनिवर, विपुलमती थे ज्ञानी।
पुष्पदंत के समवशरण में, वीतराग विज्ञानी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।62।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशताधिकसप्तसहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत की वाणी सुन्दर, भविजन का मन मोहें।
छह हजार छह सौ मुनिवादी, पुष्पदंत के सोहें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।63।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर षट् सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मुनिवर जानो लाख दो, पुष्पदन्त के साथ।
धर्म वृद्धि के भाव से, चरण झुकाते माथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि लक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं... शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री शीतलनाथ जी का अर्घ्य

प्रभू है शीतल शीतलनाथ, झुकाते जिन पद में सुर माथ।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

इक हजार चार सौ मुनिवर, पूरव धारी रहे विशेष।
शीतल जिनके समवशरण को, मिलकर पूजें भक्त अशेष।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नितप्रति, शत् शत् शीश झुकाते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: शत्युत्तर एक सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊन आठ सौ साठ सहस मुनि, शिक्षक पदवी पाए हैं
प्रभु अतींद्रिय सुख के धारी, समवशरण में आए हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।65।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर एकोनषष्टि सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सहस थे केवल ज्ञानी, शीतल जिन के शुभकारी।
इन्द्र नृत्य वादित्र बजाकर, थिरक थिरक देते तारी।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।66।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्त सहस्र द्विशत केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान के धारी मुनिवर, सप्त सहस द्वयशत गाए।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, श्री जिन के चरणों आए।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।67।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्त सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन के विक्रियाधारी, बारह सहस मुनी जानों।
प्रभु के समवशरण में आकर, आतम सुख होवे मानों।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।68।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तसहस्र पाँच सौ मुनिवर, शीतल जिन के साथ कहे।
पंच कल्याणक धारी प्रभु की, भक्ति में जो लीन रहे।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।69।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशताधिकसप्तसहस्र विपुलमति ज्ञानीमुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच हजार सात सौ वादी, शीतल जिन के साथ रहे।
समवशरण में श्री जिन सोहें, शिव पदवी के नाथ कहे।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।70।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तशत्युत्तर पंचसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (सोरठा)

एक लाख मुनिवर कहे, शीतल जिन के साथ।
शीतलता पाने विशद, चरण झुकाते माथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक लक्ष सर्वमुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री श्रेयांसनाथ जी का अर्घ्यं

नशाए कर्म श्री श्रेयांस, पूजते जिनको सुर अधिकांश।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतक् एक सौ तीन पूर्वधर, जिन श्रेयांश के कहे महान।
रहे दिव्य भाषापति जिनवर, जिनका हम करते गुणगान॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।71॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर एक सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अड़तालिस सहस दोय सौ, शिक्षक पद के धारी हैं।
प्रभु श्रेयांस की भक्ती करते, अतिशय मंगलकारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।72॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर अष्टचत्वारिंशत् सहस्रंशिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह हजार मुनि अवधिज्ञानी, दिव्यज्ञान के धारी हैं।
परमानंद परम सुख दाता, श्रेयो जिन अविकारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।73॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह हज्जार पाँच सौ भाई, केवल ज्ञानी, रहे महान।
जिन श्रेयांस के चरण कमल की, अर्चा करते हम गुणगान॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।74॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर षट् सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह हजार विक्रियाधारी, श्रेयो जिनके रहे विशेष।
प्रभू जितेन्द्रिय पद से शोभित, समवशरण में दें उपदेश।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।75।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकादश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती छह सहस मुनीश्वर, जिन दर्शन को आते हैं।
श्रेयो जिन की पद्मासन छवि, निरख-निरख हर्षाते हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।76।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र विपुलमतिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच हजार वादी मुनिवर जी, समवशरण में रहे महान।
कर्म कलंक मिटावन कारण, श्रेयो भक्ति करें गुणगान।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति शत-शत शीश झुकाते हैं।।77।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (चौपाई)

श्रेयो गुण के सप्त प्रकार, समवशरण में थे अविकार।
जलफलादि वसु द्रव्यमिलाय, मुनि गण पूजे शीश झुकाय।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुरशीतिसहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री वासुपूज्य जी का अर्घ्यं

पूज्य हैं वासुपूज्य भगवान, रहे जो विशद गुणों की खान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

एक हजार दो सौ पूरवधर, समकित ज्ञान लहाते हैं।
वासुपूज्य जिन चित्त लगाके, शिव लक्ष्मी पद पाते हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।78।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर एकसहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस उन्तालिस अरु दौ सौ मुनि, शिक्षक पदवी पाये हैं।
भवसागर से पार हेतु हम, वासु पूज्य गुण गाये हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।79।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर एकोनचत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाजात मुद्रा को धरकर, वासुपूज्य सह आये थे।
पाँच हजार चार सौ मुनिवर, अविधज्ञान प्रगटाए थे।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।80।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुःशत्युत्तर पंच सहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह हजार मुनि केवलज्ञानी, वासुपूज्य के साथ रहे।
कर्म निर्जरा करने हेतू, जो उपसर्ग अनेक सहे।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।81।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र केवलज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस हजार मुनि विक्रियाधारी, जिन दर्शन सुख पातें हैं।
वासपुज्य मन ध्यान लगाकर, शुक्ल ध्यान उपजातें हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।82।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ दश सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में छह हजार मुनि, विपुलमती के धारी हैं।
त्रिभुवन वन्दित वासुपूज्य जिन, भव-भय दुख परिहारी हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।83।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र विपुलमतिज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार सहस अरु दो सौ वादी, भवि मन कमल प्रकाशी हैं।
वासुपूज्य जिन पूजा करके, पाते अविचल राशी हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।84।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर चतुःसहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

समवशरण में वासुपूज्य के, मुनी बहत्तर सहस महान।
गीत नृत्य वादित्र बजाकर, इन्द्रादिक करते गुण गान।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, नित प्रति पूजा गातें हैं।
समवशरण में दर्शन करके, भव के पाप नशातें हैं।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वासप्ततिसहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री विमलनाथ जी का अर्घ्यं

विमल गुण धारी विमल जिनेश, पूज्य जग में जो हुए विशेष।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सहस इक सौ पूरवधर, परम पूज्य उपकारी हैं।
समवशरण में विमलनाथ जिन, अनन्त चतुष्टय धारी हैं।।

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।85।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक शत्युत्तर एकसहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अड़तिस सहस पाँच सौ मुनिवर, शिक्षक भवि मन भाते हैं।
विमल-विमल गुण गाकर सब ही, अविनाशी पद पातें हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।86।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर अष्ट त्रिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हजार आठ सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के धारी मान।
विमलनाथ भव्यों के मन मधि, मोह तिमिर को नाशें आन।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।87।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टदशत्युत्तर चतुः सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े पांच सहस्र केवली, विविध गुणों के धारी हैं।
समवशरण में विमलनाथ के, संत श्रेष्ठ अविकारी हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।88।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशताधिक पञ्चसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार विक्रियाधारी मुनि, विमलनाथ यश गाते हैं।
धन्य धन्य जिनवर की वाणी, सप्तभंग समझाते हैं।।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।89।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नव सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच सहस्र पंचशत मुनिवर, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
विमलनाथ के चरणाम्बुज में, विपुल मती मुनि आते हैं।।

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते है।90।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च शताधिक पञ्चसहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी तीन सहस अरु छह सौ, प्रभु वन्दन को आते हैं।
विमलनाथ जिन श्रद्धा धर के, अनुपम निधि को पाते हैं।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा नित्य रचातेहैं।
वसुविधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं।।91।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर त्रिसहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

विमलनाथ के पास में, मुनि अड़सठ हज्जार।
सोलह कारण भावना, भाएँ अपरम्पार।।13।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टषष्टिः सहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री अनन्तनाथ जी का अर्घ्यं

तीर्थंकर गाए श्री अनन्त, पूजते जिनपद सुर नर संत।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में सहस पूर्वधर, जिन अनंत के गाये हैं।
भव्य जीव जिन अर्चा करके अजर अमर पद पाए हैं।।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।92।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरणस्थ एक सहस्रपूर्वधर ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में अष्ट द्रव्य से, जिन अनन्त को पूज रहे।
शिक्षक उन्तालीस हजार अरु, पाँच सौ भाई श्रेष्ठ कहे।।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।93।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एकोनचत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हजार तीन सौ मुनिवर, अवधिज्ञानी माने है।
जिनानन्त की पूजा भक्ती, भव-भव के दुख हाने हैं।।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।94।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर चतुः सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पाँच हजार केवली, जग में श्रेष्ठ कहाए हैं।
समवशरण में आकर सब ही, जय-जय ध्वनि गुँजाए हैं।।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।95।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंच सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ हजार विक्रिया धारी, अनंतनाथ पद आये हैं।
दस धर्मों को धारण करके, जग में पूज्य कहाये हैं।।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।96।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट सहस्रविक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती शुभ पञ्च सहस मुनि, संयम गुण के धारी हैं।।
समवशरण में अनंतप्रभू की, आभा अतिशय कारी है।।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।97।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ पंचसहस्रविपुलमति ऋषिभ्यः अर्घ्यं...

तीन सहस अरु दो सौ वादी, जिन दर्शन को आते हैं।
जिन अनंत गुण गरिमा गाकर, सर्वोत्तम पद पाते हैं।
सात प्रकार के ऋषिवर ज्ञानी, जिनपद पूज रचाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पद में शीश झुकाते हैं।।98।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर त्रि सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं *(सोरठा)*

मुनि छ्यासठ हज्जार, प्रभु अनंत के साथ में।
पावें भवदधि पार, पूजें नित जिनपद "विशद"।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्षष्टि सहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री धर्मनाथ जी का अर्घ्यं

बहाए धर्म की जो शुभधार, धर्म जिन पाए भव से पार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

नौ सौ पूरवधारी मुनिवर, धर्म नाथ के साथ रहे।
शुद्ध हृदय से ध्याने वाले, आकुलता से हीन कहे।।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते है।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।99।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत पूर्वधर ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चालिस सहस सात सौ मुनिवर, शिक्षक पद को पाते हैं।
धर्मनाथ का ध्यान लगाकर, धर्मामृत बरसाते हैं।।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते है।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।100।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्त शत्युत्तर चत्वारिंशत् सहस्र शिक्षकमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि छत्तिस सौ अवधिज्ञानी, अनुपम सौख्य विकासे हैं।
धर्मनाथ की वाणी सुनकर, लोकालोक प्रकाशे हैं।।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते है।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।101।।
ॐ ह्रीँ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् त्रिंशत् शत अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े चार हजार केवली, धर्मनाथ गुण साजे हैं।
चार घातिया कर्म नाश कर, सिद्ध शिला पर राजे हैं।।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते है।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।102।।
ॐ ह्रीँ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर चतु: सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात हजार विक्रिया ऋद्धी, संयम तप कर पाए हैं।
धर्मनाथ के समवशरण में, भविजन क्लेश नशाएँ हैं।।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते हैं।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।103।।
ॐ ह्रीँ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तसहस्रविक्रियाधारी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती चतुसहस पंचशत, धर्मनाथ सहआए हैं।
धर्मनाथ जिनपूजा करके, स्वात्मोपलब्धी पाए हैं।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते है।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।104।।
ॐ ह्रीँ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर चतु: सहस्रंविपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार अरु आठ सौ वादी, धर्मनाथ सह तुम जानो।
समवशरण में अर्चन करके, बोधि लाभ हो यह मानो।।
रहे सप्तगण तीर्थंकर के, जिन की महिमा गाते है।
भक्त भाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते है।।105।।
ॐ ह्रीँ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर द्वि सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-(दोहा)

धर्मनाथ के पास में, मुनि चौंसठ हज्जार।
तिनके चरण नमें सदा, पाएँ सौख्य अपार॥15॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:षष्टिसहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री शांतिनाथ जी का अर्घ्यं

शांति जिन देते शांति अपार, पूजते जिनके शुभ चरणार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्यं॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

मुनि पूरव धर रहे आठ सौ, शांतिनाथ को ध्याएँ।
उनकी हम अर्चा करते हैं, भाव सहित गुण गाएँ॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥106॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशतपूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इकतालीस हजार आठ सौ, शिक्षक पद के धारी।
शांतिनाथ के पद पंकज में, मुनिवर थे अविकारी।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥107॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एकचत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन सहस मुनि अवधिज्ञानी, शांतिनाथ को ध्यावें।
शांतिनाथ पद अर्घ्यं चढ़ाकर, निज आतम सुख पावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥108॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयसहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर चार हजार केवली, शांतिनाथ को ध्यावें।
समवशरण जिन पूजा करके, ऐश्वर्य वृद्धी पावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।109।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः सहस्र केवलि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के विक्रिया धारी, छह हजार गिन लीजे।
निर्निमेष निराहार प्रभू तुम, धर्म वृद्धि मम कीजे।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।110।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हजार विपुलमति मुनिवर, शांतिनाथ सह जानों।
धर्म साम्राज्य के नायक भगवन्, पूजत श्रिय सुख ठानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।111।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः सहस्र विपुलमति ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार अरु चार सौ वादी, पंच समितियाँ पाते।
शांतिनाथ की पूजा करके, धर्म ध्यान उपजाते।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।112।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः शत्युत्तर द्वि सहस्र वादि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

शांतिनाथ के साथ में, मुनि बासठ हज्जार।
अर्चा करते भाव से, ध्यावें विविध प्रकार।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सर्व द्विषष्टि सहस्र ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री कुन्थुनाथ जी का अर्घ्यं

कुन्थु जिनवर हैं महति महान, करें जग जीवों का कल्याण।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

रहे सात सौ पूर्वधर, कुन्थुनाथ के साथ।
अर्घ्यं चढ़ा पूजा करें, करो शांति जिननाथ॥
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥113॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तशत पूर्वधर ऋषिभ्यः अर्घ्यं...

शिक्षक तैंतालिस सहस, इक सौ मुनी पचास।
कुन्थुनाथ जिन शरण में, शिक्षक करते वास॥
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥114॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरणस्थ पंचाशदधिक एकशत्युत्तर त्रयश्चत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानी जानिए, मुनिवर ढाई हजार।
श्री फल से पूजें सदा, हम भी बारम्बार॥
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥115॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशत्युत्तर द्विसहस्र अवधि ज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन सहस दो सौ मुनी, दिव्य केवली जान।
कुन्थुनाथ की भक्ति कर, पावें सुख श्रुत ज्ञान॥
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥116॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर त्रिसहस्र केवलज्ञनि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पंच सहस इक सौ मुनिनाथ, ऋद्धि विक्रियाधारी साथ।
पूज्य कहाए जो ऋषिराज, शीश झुकाए सकल समाज॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥117॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक शतोत्तर पञ्च सहस्र विक्रिया धारीमुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन सहस त्रय शतक पचास, विपुलमति कुन्थू जिन पास।
जिनगुण गावें बारम्बार, तीन लोक में मंगलकार॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥118॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक त्रि शत्युत्तर त्रि सहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार वादी मुनिराज, करें भक्ति प्रभु की ऋषिराज।
पूज्य कहाए जो ऋषिराज, शीश झुकाए सकल समाज॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥119॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि सहस्त्रवादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

कुन्थुनाथ के साठ हजार, मुनी करें सबका उपकार।
जो भवि पूजें योग लगाय, धन समृद्धी सौख्य उपाय॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥17॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरण षष्टि: सहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री अरहनाथ जी का अर्घ्यं

अरह जिनवर हैं महिमावान, पूजते मिलता शिव सोपान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

छह सौ दस मुनि पूर्वधर, अर जिन सह सब आय।
तिनकों पूजें भक्ति से, मुक्ति रमा मिल जाय॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥120॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ दशोत्तर षट्शत पूर्वधर ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि पैंतीस हजार अरु, आठ सौ पैंतिस जान।
अर जिन के शिक्षक रहे, ज्ञानी पूज्य महान॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥121॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चत्रिंशत् अधिक अष्ट शत्युत्तर पञ्चत्रिंशत् सहस्र शिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार मुनि आठ सौ, अवधि ज्ञानी जान।
अर जिन पद पूजा करें, महाव्रती गुणखान॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥122॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर द्वि सहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार अरु आठ सौ, किए स्वपर कल्याण।
प्रभु की पूजा नित करें, पाएँ केवल ज्ञान॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥123॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर द्वि सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हजार अरु तीन सौ, विक्रियाधारी पास।
अर जिन भक्ति लगाय के, शीश झुकाए दास॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥124॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर चतुः सहस्र विक्रिया धारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार पचपन मुनी, विपुलमती पद पाय।
अर जिन पूजा जो करें, उत्तम क्षमा लहाय॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥125॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चपञ्चाशत् अधिक द्वि सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार छह सौ मुनी, वादी रहे मनोग
अरह नाथ की वन्दना, का पाये संयोग॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥126॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर एक सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

गण गाए अरनाथ के, साधु पचास हजार।
समवशरण में आय कें, वन्दें बारम्बार॥18॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरण पंचाशत् सहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं... शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री मल्लिनाथ जी का अर्घ्यं

मल्लि जिन है मल्लों के नाथ, झुकाएँ मोह मल्ल पद माथ।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

साढ़े पाँच शतक पूरवधर, मल्लिनाथ के गाए।
जिनपद जय जयकार करें जो, रत्नत्रय निधि पाए॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।127।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् अधिक पञ्चशत पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक उन्तिस सहस रहे श्री, मल्लिशरण मे अविकारी।
जिन पद में जयकार करें जो, रत्नत्रय के धारी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।128।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनत्रिंशत् सहस्र शिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार दो सौ मुनि पावन, अवधि ज्ञान को पाए।
प्रभु की जय-जय करें जो, भव सागर तर जाए।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।129।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि शत्युत्तर द्वि सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार दो सौ मुनि जानो, केवल ज्ञान के धारी।
प्रभु की जय-जयकार करें वह, बनते शिव भरतारी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।130।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि शत्युत्तर द्वि सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो हजार नौ सौ मुनि भाई, विक्रिया ऋद्धी धारे।
मल्लिनाथ पद शीश नाय जो, भव की बाधा हारे।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।131।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत्युत्तर द्वि सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौने दो हजार मुनि जानो, विपुलमती शुभ ज्ञानी।
मल्लिनाथ पद शीश झुकाते, वीतराग विज्ञानी।।

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।132।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशदधिक सप्तशत्युत्तर एक सहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी एक हजार चार सौ, मल्लिनाथ के जानों।
प्रभु की शरणा पाकर नित ही, धर्मोन्नति हो मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।133।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुर्दश शत वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं *(दोहा)*

मल्लिनाथ जिनशरण में, मुनि चालीस हजार।
ध्याएँ प्रभु को नित विशद, भरें सौख्य भंडार।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चत्वारिंशत् सहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का अर्घ्यं

श्री मुनिसुव्रत शुभ व्रतधार, किए हैं वसु कर्मों का क्षार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी पूर्वधर रहे पाँच सौ, मुनिसुव्रत के भाई।
तीर्थंकर का आश्रय पाकर, कांति वृद्धि हो जाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।134।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशत पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनि इक्कीस सहस थे, समता धर अविकारी।
मुनिसुव्रत के चरण कमल में, जिन दीक्षा सब धारी।।

तीर्थंकर के साथ सप्तगण की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।135।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक विंशतिः सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर एक हजार आठ सौ, अवधिज्ञानी जानों।
मुनिसुव्रत वचनामृत सुनकर, आत्मज्ञान हो मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।136।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एक सहस्र अवधि ज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी सहस अष्ट शत, परम पूज्य पद पावें।
मुनिसुव्रत की पूजा करके, मुक्ति शिखर को जावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।137।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाईस सौ मुनि विक्रिया धारी, मुनिसुव्रत सह पाएँ।
मुनिसुव्रत के चरण कमल में, शत्-शत् शीश नमाएँ।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।138।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि शत्युत्तर द्वि सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनिराज विपुलमति, मुनिसुव्रत के गाए।
तीर्थंकर के समवशरण में, पूजा विधि सब पाए।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।139।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च शत्युत्तर एक सहस्र विपुलमति मुनिभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के बारह सौ मुनि, वादी श्रेष्ठ कहाए।
तीर्थंकर के समवशरण में, पुण्य वृद्धि शुभ पाए।।

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।140।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश शत वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (चौपाई)

मुनिसुव्रत के तीस हजार, मुनि करते जग का उपकार।
तिनकों पूजे मन वच काय, सर्व मनोरथ सफल कराय।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरण त्रिंशत् सहस्र सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री नमिनाथ जी का अर्घ्यं

कहाए श्री जिनवर नमिनाथ, जोड़ते जिन पद में हम माथ।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े चार सौ मुनी पूर्वधर, श्री नमि जिन के गाए।
तीर्थंकर का दर्शन करके, सम्यग्दर्शन पाए।।
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।141।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् चतु:शत पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सहस छह सौ शिक्षक मुनि, करुणाधारी गाए।
प्रभु को मन मन्दिर में ध्याकर, मुक्ति रमा पति पाए।।
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।142।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर द्वादश सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानी सोलह सौ मुनि, उत्तम संयम धारे।
नमि जिन महाब्रह्म पद ईश्वर, पूजें नित पद थारे।।

तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।143।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर एक सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिन चरण शरण में आकर, परम अहिंसा धारें।
सोलह सौ मुनिराज केवली, सर्व दोष को टारें।।
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।144।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनि विक्रियाधारी, मंगलवृद्धी कारी।
समवशरण नमिनाथ जिनेश्वर, मोह मल्ल क्षयकारी।।
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।145।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुल मती साढ़े बारह सौ, भविजन कल्मषहारी।
समवशरण में नमि जिनवर की, छवि जग से अति न्यारी।।
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।146।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक द्वि शत्युत्तर एक सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सहस वादी मुनि वर जी, जन्म मरण दुख नाशें।
जिन विभु विधु वेधा नमि स्वामी, निज पर भेद प्रकाशें।।
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी।।147।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– **समवशरण नमिनाथ के, मुनिवर बीस हजार।**
तिनके चरण कमल जजें, भवदधि पाने पार॥21॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति सहस्र सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री नेमिनाथ जी का अर्घ्यं

नेमि जिन होकर के स्वाधीन, हुए जो निज स्वभाव में लीन।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

मुनिवर चार सौ पूरब धारी, नेमिनाथ के गाए हैं।
समवशरण में दिव्य देशना, श्री जिनेन्द्र की पाए हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥148॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह सहस आठ सौ शिक्षक, प्रभु के साथ बताए हैं।
नेमिनाथ के शरण में राजे, शिव के नाथ कहाए हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥149॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशत्युत्तर एकादश सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमि प्रभु के पन्द्रह सौ मुनि, अवधिज्ञानी गाये हैं।
धर्म ध्वजा फहराने वाले, सम्यग्ज्ञानी पाए हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥150॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनि केवलज्ञानी, नेमिनाथ के गाये हैं।
समवशरण में शोभा पाते, अर्चा कर हर्षाए हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभु की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।151।।

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सहस्र एक सौ मुनिवर, विक्रिया ऋद्धी धारी हैं।
प्रभू नेमि पद भक्ति जगाएँ, त्रिभुवन में हितकारी हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।152।।

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकशत्युत्तर एक सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर नौ सौ विपुलमती शुभ, समवशरण में आए थे।
नेमिनाथ की शरणा पाकर, जग मे प्रभुता पाए थे।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।153।।

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत विपुलमति ज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर वादी श्रेष्ठ आठ सौ, त्रिभुवन में विख्यात रहे।
नेमिनाथ की भक्ती करके, मोह तिमिर को घात रहे।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।154।।

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

नेमिनाथ के सहस अठारह, मुनी श्रेष्ठ कहलाएँ हैं।
नग्न दिगम्बर साधू पावन, विशद पूज्यता पाए हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्टद्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।22।।

ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथ समवशरणस्थ सर्व अष्टादश सहस्र सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री पार्श्वनाथ जी का अर्घ्यं

पार्श्व मणि सम जिन पारस नाथ, करें जो अर्चा बनें सनाथ।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य॥

ॐ ह्रीँ श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

साढ़े तीन शतक पूरवधर, पार्श्व प्रभू के पास रहे।
कर्म निर्जरा करें मुनीश्वर, जय-जय-जय जिन नाथ कहे॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥155॥

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक त्रय शत पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक दश सहस्र नौ सौ मुनि, सर्व सिद्धि को पाते हैं।
पार्श्व प्रभू की शरण में आकर, धन्य धन्य गुण गाते हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥156॥

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत्युत्तर दश सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की वीतराग छवि, भविजन के मन को मोहे।
चौदह सौ मुनि अवधिज्ञानी, समवशरण में अति सोहे॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥157॥

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः शत्युत्तर एक सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में सहस केवली, पार्श्वनाथ के गाये हैं।
देवों ने आ पार्श्वनाथ पद, अतिशय कई दिखाए हैं।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥158॥

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक हजार मुनि विक्रिया धारी, वेष दिगम्बर धारी हैं।
पार्श्वनाथ जिन नाम मंत्र से, पाए पद सुखकारी हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभु की पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।159।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक सहस्र केवल ज्ञान धारी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े सात शतक मुनि ज्ञानी, विपुल मती केधारी थे।
पार्श्वनाथ के समवशरण में, अतिशय मंगल कारी थे।
सप्त गणों के साथ प्रभू की पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।160।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक सप्तशत विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में छह सौ वादी, पार्श्वनाथ के साथ रहे।
रत्नत्रय का पालन करते, मुक्ति रमा के नाथ कहे।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।161।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

समवशरण में पार्श्व के, मुनि सोलह हज्जार।
अर्घ्यं चढ़ा पूजा करें, मिले मुक्ति का द्वार।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरण षोडश सहस्र सर्वमुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पाञ्जलि।

श्री महावीर स्वामी जी का अर्घ्यं

वीर जिन हैं वीरों में वीर, मैटते जग जीवों की पीर।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्यं, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्यं।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोला छंद

मुनी तीन सौ पूरव धारी, ज्ञानी श्रेष्ठ कहाए हैं।
महावीर के समवशरण में, जो अतिशय सुख पाए हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं।।162।।

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयशत पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हजार नौ सौ मुनि शिक्षक, शांति सौख्य बरसातें हैं।
महावीर पद शीश झुकाकर, जिनवर सम गुण पातें हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।163।।

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ नव शत्युत्तर नव सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर के अवधिज्ञानी, तेरह सौ शुभकारी हैं।
जिनवर केवल-ज्ञान दिवाकर, की पूजा शिवकारी हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभु की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।164।।

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिशत्युत्तर एकसहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर के मुनी सात सौ, केवल ज्ञानी रहे महान।
तिनकों पूजें भक्ति भाव से, शिव पद का पावें स्थान।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं विशद यह, आज चढ़ाने लाए।।165।।

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तशत केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव सौ मुनी विक्रियाधारी, महावीर के साथ रहे।
समवशरण में शोभा पाते, दश धर्मों के नाथ कहे।।
सप्त गणों के साथ प्रभु की, पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं।।166।।

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत विक्रिया धारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि रहे पाँच सौ, सर्व गुणों की खान कहे।
महावीर के गुण गाने में, आगे सर्व प्रधान रहे।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥167॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चार सौ वादी मुनिवर, आत्मसिद्धि अनुरक्त रहे।
समवशरण में अर्घ्यं चढ़ाते, महावीर के भक्त कहे॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥168॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

चौदह सहस मुनी बतलाए महावीर के साथ महान।
समवशरण में शोभा पाते, वीतराग सद्गुण की खान॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥169॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुर्दशसहस्र सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्यं

तीर्थंकर के समवशरण में, सातों गण जग पूज्य रहे।
वे सब श्रेष्ठ गुणों के धारक, श्रुत पारंगत श्रेष्ठ कहे॥
वेष दिगम्बर धरकर मुनिवर, जिन धुनि को बतलाते हैं।
तिनकों वन्दे बार-बार नित, मुक्ति रमा सुख पाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट चत्वारिंशत् अष्टाविंशति लक्ष सर्व मुनिभ्य: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्राँ ह्रिँ ह्रुँ ह्रूँ ह्रेँ ह्रैँ ह्रौँ ह्र: अ सि आ उ सा सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नम:

जयमाला

दोहा– ऋषि मण्डल पूजा करें, ऋषियों का गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने मोक्ष निधान॥

(चौपाई)

अरहंतों की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
तीर्थंकर इस युग के गाए, ऋषभादिक वीरान्त कहाए॥
भव्य भावना सोलह भाए, वे तीर्थंकर पदवी पाए।
पञ्चकल्याणक पाने वाले, सारे जग में रहे निराले॥
मन में जिन वैराग्य जगाते, पावन वे संयम अपनाते।
कर्म घातिया आप नशाते, तव वह केवलज्ञान जगाते॥
इन्द्रराज की आज्ञा पावे, धनद भक्ति से चरणों आवे।
पावन समवशरण बनवावें, जिस पर श्री जी को बैठावे॥
चार कोट जिसमें मनहारी, आठ भूमियाँ मंगलकारी।
रहती बारह जहाँ सभाएँ, दिव्य देशना प्रभु की पाएँ॥
प्रथम सभा ऋषियों की जानो, सप्त ऋषी रहते हैं मानो।
गणधर आगे रहें निराले, दिव्य ध्वनि झेलने वाले॥
ऋषी पूर्वधर जिसमें आते, शिक्षक जिनकी महिमा गाते।
अवधि ज्ञानी ऋषिवर जानो, केवल ज्ञानी भी हो मानो॥
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धीधारी, विपुलमती मुनिवर अनगारी।
वादी मुनि भी जिन पद आते, श्री जिनेन्द्र की महिमा गाते॥
ऋषिवर होते ऋद्धीधारी, फिर भी रहते है अविकारी।
वीतरागता जो अपनाते, निज आतम का ध्यान लगाते॥
जिनवर ऋषि हैं महिमा धारी, मोक्ष महल के जो अधिकारी।
जिनकी हम महिमा को गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥

दोहा– 'विशद' ऋद्धिधारी ऋषी, हैं सुख के भण्डार।
भक्ती से मुक्ती मिले, यही मोक्ष का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थ जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आत्मोन्नति पाएँ विशद, करें आत्म कल्याण।
अन्तिम है यह भावना, पाएँ शिव सोपान॥

इत्याशीर्वादः

समुच्चय महाअर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान॥
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार॥
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान॥
ऊर्जन्यन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास॥
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज॥

दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ॥

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यगज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा,

चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः। ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे..... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे.. .. मासे शुभ पक्षे.... तिथौ.... वासरे....मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी॥
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादि से पूजित, जग का हरो सकल संताप॥
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार॥
शांतिदायक हे शांति जिन! श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान॥
इन्द्रादि कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन!, हमको शांति करो प्रदान॥
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभदेश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन!, यही हमारा है उद्देश॥
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल॥

(चाल छन्द)

जिनघाति कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादि जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी॥

हे शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ॥
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ॥
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ॥

दोहा– वर्ण अर्थ पद मात्रा में, हुई हो कोई भूल।
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल॥
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष॥

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष॥
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव॥
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास॥
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाए अपनेदेश॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा– लेकर जिनकी आशिका, अपने माथ लगाय।
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय॥

(कायोत्सर्ग करें)

ऋषि मण्डल आरती

(तर्ज–हो बाबा हम सब उतारें तेरी आरती...)

यंत्र ऋषी मण्डल की करते, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घृत के लाए, आज यहाँ शुभकार॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...
गोलाकार के मध्य विराजे, ह्रींकार मनहार।
चौबिस तीर्थंकर से शोभित, होता अपरम्पार॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...
ऋषि मण्डल स्तोत्र जाप से, मन वांछित फल पाए।
शाकिन डाकिन भूत-प्रेत की, बाधा नहीं सताए॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...
रोग-शोक सर्पादी का विष, क्षण में होय विनाश।
निर्धन मन वांछित धन पावें, होवे पूरी आस॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...
पुत्र हीन सुत पावें वांछित, ग्रह का मिटे क्लेश।
खोये स्वजन वस्तु को पायें, शान्ति पायें विशेष॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...
हर्षित मन से करें आरती, पावे पुण्य अशेष।
अनुक्रम से मुक्ति पद पावें, जावें स्वयं स्वदेश॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवें कर्म विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पाएँ शिवपुर वास॥
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती...

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते तिजारा अतिशय क्षेत्रे, अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2540 वि. सं. 2071 भादो मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी सोमवार वासरे श्री ऋषि मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।